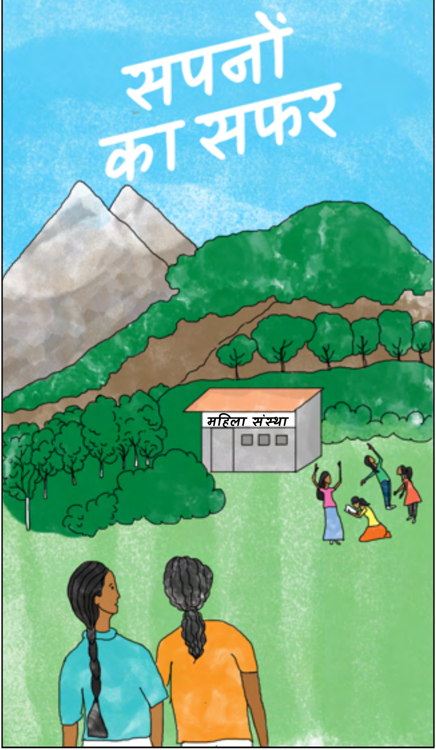

UDAYA chitrakoot collective BEHANBOX

बुलबुल: हम कितने लकी हैं ना?

फ़ैज़ा: हां, कभी सपने में भी नहीं सोचा था की एक दिन ऐसी जगह पहुंचेंगे.

बुलबुल: मैं जब भी अपने सपनों के सफर के बारे में सोचती हूं मुझे तो विश्वास ही नहीं होता कि मैं कैसे यहाँ तक पहुँच पायी हूं.

फ़ैज़ा: मैंने तुमसे कभी नहीं पूछा है... महिला संस्था तक कैसे पहुंची तुम?

बुलबुल: लम्बी कहानी है....

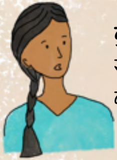

बुलबुल: मैं बिहार के एक छोटे से पिछड़े से गांव की रहने वाली हूँ.

बुलबुल: मैंने दसवी तक की पढ़ाई अपने गांव में ही की. मेरे घर में किसी और ने इतनी पढ़ाई नहीं की है. बस मुझे पढ़ना लिखना बहुत पसंद है. लेकिन गांव के स्कूल में टीचर कम है और पढ़ाई का स्तर भी.

बुलबुल: मेरा सपना है पुलिस अफसर बनना. इसके लिए मुझे गांव से बाहर निकलकर कोचिंग लेना था. लेकिन जैसे ही मैंने ये बात कही तो सब डर गए. मेरी मम्मी शादी की बात करने लगी. भाई भी बोलने लगा कि यह जायेगी तो घर का काम कौन करेगा. पापा बोलने लगे की शायद इतना पढ़ाकर ठीक नहीं किया.

बुलबुल: अगले दिन मेरे चाचा घर आये थे. एक संस्था का पोस्टर लेकर. जिसमे एक साल के रेजिडेंशियल कोर्स के बारे में जानकारी थी. ग्रामीण विकास प्रबंधन जैसे सब्जेक्ट में कोर्स के बाद जॉब की गारंटी भी थी. यह सब सुनकर मेरी ख़ुशी के ठिकाने नहीं थे. मैंने तय कर लिया कि मुझे यहां जाना है.

चलिए देखें बिहार में कितनी लड़कियां वर्त्तमान में स्कूल में नामांकित हैं?

67%	13-17 वर्ष
31%	18-22 वर्ष

साभार: उत्तर प्रदेश और बिहार में प्रोजेक्ट उदया का किया हुआ सर्वेक्षण (2015-16 और 2018-19)

घर कौन संभालेगा? घर का काम माताजी करेंगी क्या?

बाहर जाएगी तो बिगड़ जाएगी लड़की.

इतना पढ़ लिखकर लड़कियों के लिए क्या फायदा?

गरीब माँ बाप का पैसा खर्च कर रही है!

सपने देखने का हक़ तुमको किसने दिया?

फ़ैज़ा: बुलबुल तुम कितनी बहादुर हो! थैंक गॉड मुझे गांव से बाहर जाकर पढ़ाई करने का मौका मिला.

फ़ैज़ा: पढ़ाई के बाद मैंने मेरे गांव के पास एक एनजीओ में जॉब लिया. हर रोज़ काम करने मैं टाउन जाती थी. लेकिन गांव वालों की रोक टोक की वजह से परिवार ने मेरी शादी कर दी. मुझे लगा मेरा आगे पढ़ने का सपना ख़त्म हो जाएगा.

फ़ैज़ा: जब महिला संस्था में एक साल के आवासीय कोर्स का एप्लीकेशन निकला तो मैंने अपने पति और माता-पिता से बात किया कि मैं आगे पढ़ना चाहती हूँ और जॉब करना चाहती हूँ. मेरे परिवार ने मेरे एस्पिरेशन को सपोर्ट किया. इससे मुझे बहुत ख़ुशी मिली.

बिहार में कितने किशोर किशोरियां अपने से निर्णय ले पा रहे हैं?

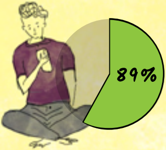

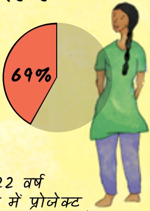

किशोर किशोरियों की उम्र 18-22 वर्ष
साभार: उत्तर प्रदेश और बिहार में प्रोजेक्ट उदया का किया हुआ सर्वेक्षण (2015-16 और 2018-19)

बुलबुल: मुझे तो मोबाइल फ़ोन के लिए भी झगड़ना पड़ा! अब फ़ोन मिला है लेकिन इस पर सोशल मीडिया नहीं चलाती हूँ. मना किया गया है.

बिहार मे कितने किशोर किशोरियों के पास खुद का मोबाइल है?

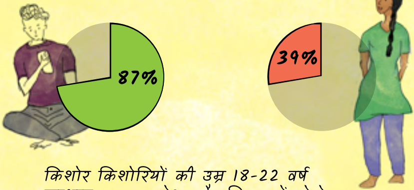

किशोर किशोरियों की उम्र 18-22 वर्ष
साभार: *उत्तर प्रदेश और बिहार में प्रोजेक्ट उदया का किया हुआ सर्वेक्षण (2015-16 और 2018-19)*

बुलबुल: कौन छोड़ेगा मुझे?

फ़ैज़ा: वो सफर मुझे भी याद है. मैंने भी अकेले बस पकड़ी थी.

बुलबुल और फ़ैज़ा को महिला संस्था आकर काफी महीने हो गए हैं. वो दोनों ग्रामीण विकास प्रबंधन और गणित सीख रहे हैं.

मुझे लगता है यहां आकर
मेरी ज़िन्दगी बदल गयी है.

साभार: इस ज़ीन की रचना साझे सपने के साथ आयोजित वर्कशॉप के माध्यम से हुआ है. यह ज़ीन चित्रकूट कलेक्टिव और बहनबॉक्स की पेशकश है. डाटा उदया सर्वे से लिया गया है. और यह प्रोजेक्ट पॉपुलेशन कॉउंसिल के अनुदान से संभव हुआ है.